उपसंहार

किसी भी भाषा में पाए जाने वाले शब्दों को उनके आर्थी, प्रकार्यात्मक एवं वाक्यात्मक व्यवहार के अनुरूप बनाए गए वर्ग शब्दवर्ग हैं। अधिकांश व्याकरणों में इनकी संख्या आठ (8) बताई गई है, जो इस प्रकार है- जैसे- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक हैं। इन्हें अंग्रेजी में **(part of speech)** कहते हैं। शब्दभेदों को विकार के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है जिसमें शब्दों की रूपरचना एवं वाक्यात्मक व्यवहार को देखा जाता है। इस आधार पर इनके दो भेद सामने आते हैं- **विकारी और अविकारी।**

अधिकांश भाषाओं में 'विकारी' के अंतर्गत **'संज्ञा', 'सर्वनाम', 'विशेषण' एवं 'क्रिया'** आदि आते हैं तथा 'अविकारी' के अंतर्गत **'क्रियाविशेषण', 'समुच्चयबोधक', 'संबंधबोधक' एवं 'विस्मयादिबोधक'** आते हैं। भोजपुरी में भी यही स्थिति प्राप्त होती है। इनमें सर्वनाम 'विकारी' के अंतर्गत आता है। अत: इनमें रूपरचनात्मक परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इसे ही ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया गया।

हिंदी की भाँति भोजपुरी में भी सर्वनाम हैं; जैसे- **'हम', 'तू, 'ऊ', 'रउवा', 'केहू', 'कवन'** आदि। भोजपुरी में सर्वनाम के छह प्रकार हैं- **1.** पुरुषवाचक सर्वनाम- **उत्तम पुरुष-** हम, हमहन, हमनीकऽ, हमहनकऽ आदि। **मध्यम पुरुष-** तू, तूं, तोहनीकऽ (तोहनकऽ), रउआँ, रउआँ सभे (रावाँ साभे) आदि। **अन्य पुरुष-** ऊ, इ, ऊ लोग, उन्हनीकऽ, उन्हनकऽ, उहां सबके आदि। **2.** निजवाचक सर्वनाम- आपन, अपने आदि **3.** निश्चयवाचक सर्वनाम-- ई, हई, इहाँ, उ, हऊ, उहाँ, एकर, हेकर, हिनकरा आदि। **4.** अनिश्चयवाचक सर्वनाम- के, का, कऽवन/कौन, केकर आदि। **5.** प्रश्नवाचक सर्वनाम- के, का, कवन/कौन, केकर आदि। **6.** संबंधवाचक सर्वनाम- जे, से, जौन, जवन आदि 'सर्वनाम' के प्रकार हैं।

सर्वनाम के साथ उन्हीं परसर्गों का प्रयोग होता है, जो संज्ञा के साथ जुड़ते हैं किंतु परसर्गों के लगने पर सामान्यत: संज्ञा के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है; जैसे- मोहन+के = **मोहन के,** बनारस+ से= **बनारस से,** मेज +पऽ= **मेज पऽ** । जबकि सर्वनाम के साथ में परसर्ग लगने से उनके रूप में परिवर्तन हो जाता है; जैसे- हम+को=

हमके, तू+से= **तोहसे/ तोहनी से**, आप+से= **आपसे**, ई+से= **इनसे** आदि। जब सर्वनाम **'कर्ता'** कारक के रूप में हो तब उसके रूप में विकार नहीं होता, क्योंकि भोजपुरी में कर्ता कारक के रूप में कोई परसर्ग नहीं है।

भोजपुरी में सर्वनामों के साथ लगने वाले परसर्गों से बनने वाले रूपों का एक नमूना इस तालिका में देखा जा सकता है-

स. सूची	**परसर्ग सूची**						
	0	**के**	**से**	**क/आर/कर**	**में**	**प•**	**खातिर**
हम	हम	हमके	हमसे	हमार	हमरा में	हमरा पऽ	हमरा खातिर
तू	तू	तोके	तो से	तोर	तोरा में	तोरा पऽ	तोरा खातिर
ऊ	ऊ	ओके	ओ से	ओकर	ओकरा में	ओकरा प ऽ	ओकरा खातिर
रऊआ	रऊआ	रऊआ के	रऊआ से	रऊआ कऽ	रऊआ में	रऊआ प ऽ	रऊआ खातिर
केहू	केहू	केहू के	केहू से	केहू कऽ	केहू में	केहू पऽ	केहू खातिर
कवन	कवन	कवना के	कवना से	कवना कऽ	कवना में	कवना पऽ	कवना खातिर
जवना	जवन	जे के	जे से	जेकर	जे में	जेप जेकरा पऽ	जेकरा खातिर

भोजपुरी शब्दों में रूप-विकार और प्रत्यय-योग एक साथ होता है; जैसे- तू+के = **तोहन के(बहुवचन), तू+के =तोके, तू+पऽ = तोरा पऽ, तोहने के, तोहनियेके** । इसी प्रकार एकाधिक प्रत्यय भी एक साथ लगते हैं; जैसे- **तोहनिये के त**ऽ आदि इनके रूपों में इतनी विविधता देखने को मिलती है कि किसे कब प्रयोग में लाया जाए; जैसे– **इ/हई** में केवल 'के' परसर्ग के जुड़ने पर इ+के= एके, इ+के= **इनके,** इ+के= **इनका के,** इ+के **इनकरा के** इसी प्रकार से इ+के = **इनहन के,** इ+के **इन्हन के, एहने के** रूप में भी देखा जा सकता है। इसलिए कई बार यह निर्धारित कर पाना कठिन हो जाता है कि प्रत्यय को मूल शब्द के साथ मिलाकर लिखा जाए या अलग।

किसी सर्वनाम के साथ परसर्ग के जुड़ने पर भोजपुरी में उनके रूपों में ' – **सम्मान' एवं '+ सम्मान'** भी देखने को मिलता है; जैसे- '– सम्मान' के रूप में- ऊ+के= **उनहन के,** ऊ+के= **उन्हन के,** ऊ+के= **ओहनी के, '+ सम्मान'**

के रूप में ऊ+के= **उन्हनीं के,** ऊ+के= **उहां के** । इसी प्रकार जवन +के = **जवना के**‘ (– **सम्मान),** जवन +के =**जेकरा के (+ सम्मान)** रूप में देखा जा सकता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वनामों और निपतों के योग से बनए वाले रूपों को भी सम्मिलित किया गया है। निपात अव्यय का एक प्रकार है जिसका संज्ञा, सर्वनाम, एवं विशेषण आदि के साथ जोड़कर प्रयोग किया जाता है। यह निश्चित शब्द, शब्द समूह या पूरे वाक्य को भावार्थ प्रदान करता है। भोजपुरी सर्वनाम के साथ निपात के जुड़ने पर भी इनके रूपों में भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं; जैसे-

सर्वनाम सूची	**निपात सूची**						
सर्वनाम सूची	**ही**	**भी**	**तो**	**सर्वनाम सूची**	**ही +के**	**भी +के**	**तो+के**
हम	हमहीं	हमहूँ	हमत	**हम**	हमहींके	हमहूँ के	हमके तऽ
तू	तूहीं	तूहूँ	तूत	**तू**	तोरे के	तोरो के	तोके तऽ
ऊ	ऊहे	ऊहो		**ऊ**	ओहने के	ओहनोके	ओहनोके तऽ
रऊआ	रऊए	रऊओ	रऊआत	**रऊआ**	रऊए के	रऊओ के	रऊआ के तऽ
केहू	-	केहुओ	केहूत	**केहू**	-	केहुओ के	केहूके तऽ
कवन	-	कवनो	कवनोत	**कवन**	-	कवनो के	कवनोके तऽ
जवना	जेवने	जेवनों	-	**जवना**	जेवने के	जेवनों के	जेवने के तऽ

भोजपुरी में ‘हम’ सर्वनाम का प्रयोग हिंदी के ‘मैं’ के रूप में किया जाता है लेकिन जब इसके साथ ‘**ही’, ‘भी’** एवं ‘**तो’** निपात जोड़ते हैं, तो इनके रूपों में निम्न परिवर्तन होता है; जैसे- हम+ ही = **हमहीं,** हम+ भी= **हमहूँ** हम+ तो= **हम तऽ** ।

भोजपुरी सर्वनाम और निपात के योग में भी ‘**–सम्मान’ और ‘+ सम्मान**’ जैसी स्थितियाँ देखने को मिलती हैं; जैसे- ‘**–सम्मान’** के रूप में- ई/हई+ही= **हईहे**, ई/हई+भी=**हईहो**, ई/हई+तो=**ईतऽ** एवं **‘+ सम्मान**’ के रूप में- ई/हई+ही= **ईहो**, ई/हई+भी= **ईहो**, ई/हई+तो =**हई तऽ** आदि के रूप में देखा जा सकता है।

भोजपुरी में 'केहू' के साथ 'भी', 'तो' निपात के जुड़ने से इनके रूपों में परिवर्तन होता है; जैसे- केहू + भी = **केहुओ** या **केहुओ के**, केहू+ तो = **केहूत**ऽ या **केहूके त**ऽ लेकिन 'ही' निपात का योग **कुछ, कवन/ कौनो** सर्वनाम के साथ नहीं होता है।

वाक्यों में किसी इकाई के स्थान विशेष पर घटित होने अथवा उसके प्रकार्य(Functionl) के आधार पर पदबंधों की प्रकार्यत्मक कोटियों का निर्धारण होता है जिनमें क्रिया पदबंध को एक अनिवार्य घटक माना जाता है । क्रिया पदबंध के निर्माण में मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया का योग होता है। हिंदी और भोजपुरी की संरचनात्मक व्यवस्था में क्रिया पदबंध प्रायः अंत में मिलता है। भोजपुरी सर्वनामों के साथ एक से अधिक किया रूपों का प्रयोग मिलता है; जैसे- रऊआ खाईं ना । इसी प्रकार से निषेध के रूप में तू ना खात रहऽल/ रहले। इस प्रकार से भोजपुरी में विभिन्न प्रकार के क्रिया रूपों का प्रयोग किया जाता है। हिंदी में निषेध के लिए 'नहीं', 'न' का प्रयोग होता है जबकि भोजपुरी में निषेध के लिए **नइखन, ना, नइखे, नाहीं** आदि का प्रयोग होता है।

उपयोगिता

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की उपयोगोता को निम्नलिखित रूप में समझ सकते हैं-

1. सर्वनाम की रचना एवं प्रयोग को समझने में।

2. तुलनात्मक अध्ययन में सहायक।

3. भोजपुरी व्याकरण निर्माण एवं शिक्षण में।

4. भोजपुरी के भाषिक टूलों के निर्माण में।

संभावना

- प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध "भोजपुरी सर्वनाम का रूप वैज्ञानिक अध्ययन" भोजपुरी भाषा के संज्ञा, विशेषण आदि जैसे शब्दभेदों का रूपवैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है।
- आज के आधुनिक युग में मानव अपने व्यावहारिक कार्यों के साथ-साथ भाषा संबंधी कार्यों को भी कंप्यूटर के माध्यम से कराने के लिए लगातार प्रयास में लगा है। यदि इस क्रम में भोजपुरी से संबंधित

कोई भाषिक टूल बनाएं जाएँ तो भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग तथा निपात योग से बनने वाले इन रूपों के लिए नियम निर्माण प्रस्तुत लघु शोध कार्य अत्यंत उपयोगी होगा।

- भोजपुरी भाषा की विभिन्न पक्ष पर भाषा प्रद्योगिकी के क्षेत्र में शोध की अनेक संभावनाएं हैं।
- भोजपुरी सर्वनाम और परसर्ग तथा निपात योग से बनने वाले इन रूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है; जैसे-बहुवचन के रूप में-(-सम्मान) तोहनिए +के तथा (+सम्मान) तोहनिए +के= तोहनिए लोग के।

सीमा

प्रस्तुत शोध प्रबंध की सीमा के रूप में देखा जा सकता है कि इसमें केवल भोजपुरी के सर्वनामों को लेकर कार्य पूर्ण किया गया है। सर्वनामों के साथ मुख्य रूप से 'ही' 'भी' और 'तो' निपात को जोड़कर बनने वाले रूपों का अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।